E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2025; 7(7): 112-114
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 15-05-2025
Accepted: 17-06-2025

इंद्र सिंह
राजनीती विज्ञान विभाग, स्व० जयदत्त वैला राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

दीपा मेहरा रावत
राजनीती विज्ञान विभाग, स्व० जयदत्त वैला राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

चन्द्रप्रकाश फुलोरिया
इतिहास विभाग, सोबन सिंह जीना विश्विद्यालय, परिसर अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
इंद्र सिंह
राजनीती विज्ञान विभाग, स्व० जयदत्त वैला राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

उत्तराखंड के जननायक: सोबन सिंह जीना के जीवन एवं योगदान पर आधारित भगत सिंह कोश्यारी (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र) के साक्षात्कार पर आधारित शोधपत्र

इंद्र सिंह, दीपा मेहरा रावत, चन्द्रप्रकाश फुलोरिया

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i7b.595

सारांश
यह शोधपत्र स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद्, समाज सुधारक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री सोबन सिंह जीना के जीवन, विचारों एवं बहुआयामी योगदानों का विश्लेषण करता है। यह शोध 20 जनवरी को देहरादून स्थित पूर्व राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के अतिथि गृह में शोधार्थी इंद्र सिंह द्वारा लिए गए विशेष साक्षात्कार पर आधारित है। इस अध्ययन में उनके विद्यार्थी जीवन, सामाजिक सुधार प्रयासों, शिक्षा, जल व स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्य, ईमानदार राजनैतिक दृष्टिकोण तथा उत्तराखंड के पर्वतीय समाज में जागरूकता लाने के अविस्मरणीय प्रयासों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। यह शोध सिद्ध करता है कि सोबन सिंह जीना का जीवन और कार्य वर्तमान व भावी जनप्रतिनिधियों के लिए प्रेरणा एवं दिशासूचक है।

कुटशब्दः सोबन सिंह जीना, स्वतंत्रता संग्राम, समाज सुधार

प्रस्तावना
उत्तराखंड का इतिहास अनेक महान विभूतियों की प्रेरक गाथाओं से भरा है [1, 2], जिनमें सोबन सिंह जीना का नाम विशेष सम्मान से लिया जाता है। उन्होंने अपने जीवन में सामाजिक कुरीतियों को मिटाने, शिक्षा को बढ़ावा देने और पर्वतीय अंचल में विकास की नींव रखने का कठिन कार्य किया। उत्तराखंड के दूरस्थ व संसाधनहीन पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य व जल जैसी बुनियादी सुविधाओं की घोर कमी थी, वहाँ सोबन सिंह जीना ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया बल्कि स्वतंत्रता के पश्चात समाज व राजनीति को भी सेवा का माध्यम बनाया [3-5]।
उनकी दूरदृष्टि, समाज सुधार हेतु प्रतिबद्धता और शिक्षा व सामाजिक समरसता का कार्य इस शोध का केन्द्रीय विषय है। भगत सिंह कोश्यारी (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र) द्वारा दिए गए प्रामाणिक साक्षात्कार ने इस अध्ययन को और अधिक ऐतिहासिक व तथ्यपरक बना दिया है।

उद्देश्य (Objectives)
1. सोबन सिंह जीना के जीवन, शिक्षा और विचारधारा को समझना।
2. उनके द्वारा उत्तराखंड में किए गए सामाजिक व शैक्षिक सुधार कार्यों का विश्लेषण करना।
3. उनके नैतिक व पारदर्शी राजनीतिक दृष्टिकोण को रेखांकित करना।
4. भगत सिंह कोश्यारी द्वारा व्यक्त संस्मरणों के आलोक में उनके व्यक्तित्व को उजागर करना।
5. वर्तमान व भावी जनप्रतिनिधियों के लिए उनके जीवन से प्रेरक आदर्शों को सामने लाना।

शोध पद्धति (Methodology)
यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें मुख्य स्रोत के रूप में
- 20 जनवरी को देहरादून स्थित भगत सिंह कोश्यारी (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र) द्वारा शोधार्थी इंद्र सिंह को दिया गया मौखिक साक्षात्कार का उपयोग किया गया है।

चित्र 1: मौखिक साक्षात्कार; 20 जनवरी को देहरादून स्थित भगत सिंह कोश्यारी (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र) [6]

साथ ही इस शोध में

- शोभन सिंह जीना के जीवन से जुड़े ऐतिहासिक घटनाक्रम,
- स्थानीय समाचार अभिलेखों,
- मौखिक परम्पराओं

का भी सहायक संदर्भ के रूप में उल्लेख किया गया है।

विवेचन एवं विश्लेषण (Discussion & Analysis)

1. विद्यार्थी जीवन एवं गांधीवादी प्रभाव

सोबन सिंह जीना ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा से लेकर एल.एल.बी. तक सदैव श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वे विश्वविद्यालय में रहते हुए खादी पहनते थे तथा महात्मा गांधी के विचारों से गहरे प्रभावित थे। यही नहीं, उन्होंने अपने छात्र जीवन में ही समाज में व्याप्त अशिक्षा और भेदभाव को दूर करने की ठानी।

2. जातीय कुरीतियों का उन्मूलन

भगत सिंह कोश्यारी ने बताया कि जीना जी ने कहा था—
"हमारे राजपूत समाज में पढ़ाई को लेकर उदासीनता है। मैं चाहता हूँ कि इन्हें शिक्षित करूँ।"
इसके लिए उन्होंने हर्गोविंद पंत से आशीर्वाद लिया और 'छोटा ठाकुर-बड़ा ठाकुर' जैसी विभाजनकारी सोच को समाप्त करने का आह्वान किया। वे कहते थे कि सबको एक पंक्ति में बैठकर खाना चाहिए, पढ़ना चाहिए और मिलकर समाज को जागरूक करना चाहिए।

3. शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान

उन्होंने **कुमाऊँ राजपूत शिक्षा परिषद** की स्थापना की, ताकि समाज में शिक्षा का प्रचार हो। इसके बावजूद कुछ लोगों ने इसे संकीर्ण जातीय मंच कहकर प्रचारित किया, पर जीना जी ने अपने उद्देश्यों से समझौता नहीं किया।
वे अल्मोड़ा डिग्री कॉलेज व इंटर कॉलेज के आजीवन सचिव रहे। बाड़ेछिना इंटर कॉलेज और नारायण नगर इंटर कॉलेज का संचालन भी उन्होंने पूरी निष्ठा से किया। उन्होंने कभी किसी की सिफारिश नहीं की, योग्यता को ही नियुक्ति का आधार बनाया।

4. मंत्री रहते हुए जनहित के कार्य

1977 में विधायक और मंत्री बने तो उन्होंने संकल्प लिया कि—
"मैं अपने पहाड़ के हर गांव में पानी पहुँचाऊँगा।"
केवल 18 महीनों के कार्यकाल में ही 1000 से अधिक गांवों में पानी की व्यवस्था की। साथ ही कहा कि हर क्षेत्र में दो-दो हाईस्कूल खोलेंगे, चाहे वह कांग्रेस या जनसंघ समर्थक हो, स्कूल सबके लिए होंगे।

5. अपने क्षेत्र के छात्रों के लिए संघर्ष

कल्याण सिंह की कैबिनेट में जब उत्तराखंड के छात्रों के मेडिकल कॉलेज में आरक्षित सीटें समाप्त करने का प्रस्ताव आया, तो जीना जी ने कहा—
"तो फिर मैं मंत्री क्यों रहूँ? मेरा इस्तीफा ले लो।"
उनकी दृढ़ता के कारण वह प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। इससे उनका क्षेत्रीय छात्रों के हितों के लिए अडिग समर्पण स्पष्ट होता है।

6. ईमानदार और सादगीपूर्ण जीवन

कोश्यारी जी ने कहा कि जीना जी मंत्री रहते हुए भी सरकारी गाड़ी का प्रयोग स्वयं करते थे, न किसी रिश्तेदार को देते। जहाँ भी जाते, अपने खाने-रहने का खर्च स्वयं वहन करते।
उनकी मृत्यु के समय बैंक खाता लगभग शून्य था। उन्होंने कहा—
"उन्होंने समाज सेवा अपने घर से खर्च करके की।"

निष्कर्ष (Conclusion)

सोबन सिंह जीना का जीवन ईमानदारी, सेवा और दूरदृष्टि का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने शिक्षा, सामाजिक समरसता और विकास के माध्यम से उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में नई चेतना जगाई। अपने कार्यों से उन्होंने यह सिद्ध किया कि राजनीति केवल सत्ता पाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को सशक्त करने का एक ज़रिया है।
मंत्री रहते हुए भी उन्होंने निजी स्वार्थ के लिए कभी पद का दुरुपयोग नहीं किया। अपने गाँव-गाँव तक पानी पहुँचाने, स्कूल खोलने और मेडिकल कॉलेज में उत्तराखंड के छात्रों के आरक्षण को बचाने के लिए उन्होंने हर संभव कदम उठाया।
भगत सिंह कोश्यारी (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र) के संस्मरणों से स्पष्ट होता है कि सोबन सिंह जीना ने अपने व्यक्तिगत जीवन में भी अपार सादगी और ईमानदारी रखी। वे सरकारी खर्चों का निजी लाभ नहीं उठाते थे, बल्कि अपने भोजन और यात्रा तक का खर्च स्वयं वहन करते थे।
आज जब राजनीति में नैतिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है, जीना जी का आदर्श जीवन हमें सिखाता है कि एक सच्चा जनप्रतिनिधि वही है जो समाज के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करे। उनका जीवन उत्तराखंड ही नहीं, समूचे भारत के लिए अनुकरणीय है।

सहयोग स्वीकृति (Acknowledgement)

मैं माननीय श्री भगत सिंह कोशियारी जी (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र) को उनके 20 जनवरी को देहरादून में किए गए व्यक्तिगत साक्षात्कार हेतु विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ। उनका अनुभव एवं विचार मेरे शोध के लिए अत्यंत सहायक रहे।

सन्दर्भ

1. Kafaltia, Himanshu; Kafaltia, Gunjan Sharma (2019-08-30). A Comprehensive Study of UTTARAKHAND (अंग्रेज़ी भाषा में). Notion Press. ISBN 978-1-64650-604-0.
2. Chauhan, P. (2023, May 3). *उत्तराखंड की महान विभूतियां: आजाद हिंद फौज का जांबाज सिपाही 'केसरी चंद', जिन्हें मिला जौनसारी गीतों में सम्मान.* Panchjanya.
3. Singh, I., Rawat, D. M., Joshi, R., & Fuloria, C. (2025). Soban Singh Jeena: A study on his life, family, and Uttarakhand's cultural heritage. International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 14(1[4]).

4. हिन्दुस्तान, अल्मोड़ा। (2021)। "सोबन सिंह जीना को उनके गांव सुनौली में किया याद।" प्रकाशित: बुधवार, 4 अगस्त 2021
5. गोविंद सिंह भंडारी, वी.डी.एस. नेगी, प्रकाश लखेड़ा। (2010)। "कर्म योगी महापुरुष सोबन सिंह जीना शताब्दी वर्ष स्मारिका।" पृष्ठ 129, 4 अगस्त 2010।
6. कोश्यारी, भगत सिंह (पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र)। व्यक्तिगत साक्षात्कार, 20 जनवरी, देहरादून।